नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

बांग्लादेश : भारत को चौकस रहने की जरूरत

पड़ोसी बांग्लादेश में बीते कुछ समय से जिस तरह की हिंसा, अराजकता और लक्षित दंगों की घटनाएं सामने आ रही हैं, वह केवल ढाका की आंतरिक समस्या भर नहीं रह गई है. हिंदू अल्पसंख्यकों के खिलाफ हमले, मंदिरों की तोड़फोड़, घरों-दुकानों में आगजनी और सोशल मीडिया के जरिए नफरत का संगठित प्रसार, ये संकेत हैं कि बांग्लादेश एक बार फिर अस्थिरता के खतरनाक मोड़ पर खड़ा है. ये आग की लपटें अगर समय रहते नहीं थामी गईं, तो उसका असर भारत की सीमाओं तक आना तय है.

बांग्लादेश का इतिहास बताता है कि जब-जब वहां राजनीतिक सत्ता कमजोर हुई या कट्टरपंथी ताकतों को खुली छूट मिली, तब-तब अल्पसंख्यक सबसे आसान निशाना बने. मौजूदा हालात में भी वही पुराना पैटर्न दोहराया जा रहा है. हिंदू विरोधी हिंसा को 'भीड़ का उग्र रूप' कहकर टालना सच्चाई से मुंह मोड़ना होगा. यह सुनियोजित है, प्रायोजित है और इसके पीछे भारत-विरोधी मानसिकता भी साफ झलकती है. भारत के लिए यह स्थिति इसलिए भी गंभीर है क्योंकि बांग्लादेश से उसकी 4,000 किलोमीटर से अधिक की सीमा जुड़ी है. अस्थिर बांग्लादेश का सीधा असर भारत के पूर्वोत्तर राज्यों, असम, त्रिपुरा, मेघालय और पश्चिम बंगाल पर पड़ता है. शरणार्थी संकट, सीमा पार घुसपैठ, कट्टरपंथी संगठनों की आवाजाही और तस्करी, ये सभी राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए बड़े खतरे हैं. इतिहास गवाह है कि 1971 से लेकर हाल के वर्षों तक, बांग्लादेश की उथल-पुथल का बोझ भारत को उठाना पड़ा है.

यह भी ध्यान देने योग्य है कि बांग्लादेश में सक्रिय कई कट्टरपंथी संगठन भारत को 'रणनीतिक दुश्मन' मानते हैं. हिंदू विरोधी हिंसा केवल धार्मिक उन्माद नहीं, बल्कि भारत के खिलाफ एक मनोवैज्ञानिक युद्ध का हिस्सा भी है. सोशल मीडिया पर भारत-विरोधी अफवाहें, सीमा से सटे इलाकों में तनाव और उग्र भाषण, ये सब आने वाले बड़े संकट की आहट हैं.

ऐसे में भारत के सामने दोहरी चुनौती है,एक ओर मानवीय मूल्यों और अल्पसंख्यकों की सुरक्षा का प्रश्न, दूसरी ओर राष्ट्रीय सुरक्षा और क्षेत्रीय स्थिरता की जिम्मेदारी. भारत अब 1970 या 1990 के दशक वाला कमजोर भारत नहीं है. वह एक उभरती शक्ति है, जिसकी आवाज क्षेत्रीय राजनीति में मायने रखती है. इसलिए केवल 'चिंता व्यक्त करने' या 'अपील जारी करने' से काम नहीं चलेगा. भारत को कूटनीतिक स्तर पर सख्त संदेश देना होगा कि बांग्लादेश में अल्पसंख्यकों पर हिंसा बर्दाश्त नहीं की जा सकती. अंतरराष्ट्रीय मंचों पर इस मुद्दे को उठाना, ढाका सरकार पर दबाव बनाना और जरूरत पड़ने पर लक्षित प्रतिबंधों पर विचार करना,ये सभी विकल्प खुले रखने होंगे. साथ ही, सीमा सुरक्षा को और मजबूत करना, खुफिया तंत्र को सक्रिय रखना और किसी भी आपात स्थिति के लिए रणनीतिक तैयारी करना अनिवार्य है.

यह भी स्पष्ट होना चाहिए कि यदि हालात नियंत्रण से बाहर जाते हैं और भारत की सुरक्षा या सीमावर्ती राज्यों की स्थिरता पर सीधा खतरा पैदा होता है, तो भारत को अपने राष्ट्रीय हित में निर्णायक हस्तक्षेप से भी पीछे नहीं हटना चाहिए. यह हस्तक्षेप केवल सैन्य नहीं, बल्कि कूटनीतिक, आर्थिक और रणनीतिक भी हो सकता है. बांग्लादेश की धरती पर जल रही हिंसा की आग को भारत अनदेखा नहीं कर सकता. सतर्कता, सख्ती और स्पष्ट नीति,यही समय की मांग है. शांति की पहल तभी सफल होगी, जब शक्ति और संकल्प दोनों साथ-साथ चलें.

सरदार सरोवर बांध से समग्र विकास

दिलीप झा

> सरदार सरोवर बांध और स्टैच्यू ऑफ यूनिटी के कारण नर्मदा क्षेत्र पर्यटन केंद्र के रूप में उभरा। होटल, गेस्टहाउस और स्थानीय रोजगार में वृद्धि हुई। नर्मदा घाटी में वनों, वन्यजीवों और जल संसाधनों के संरक्षण के प्रयास तेज हुए। पर्यटन से संबंधित उद्योगों में लगभग 30 प्रतिशत की वृद्धि हुई है, जिससे होटल व्यवसाय, गाइड, परिवहन और खुदरा व्यापार को लाभ मिला है। सरदार सरोवर बांध एवं नर्मदा घाटी विकास प्राधिकरण मध्यप्रदेश के लिए वरदान सिद्ध हुए हैं। इस परियोजना ने न केवल जल प्रबंधन और बिजली उत्पादन को सुदृढ़ किया है, बल्कि पर्यावरण संरक्षण, पर्यटन विकास, औद्योगिक विस्तार और रोजगार सृजन में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। नर्मदा नदी एवं उसके आसपास के क्षेत्रों में जलवायु संरक्षण, वन्यजीव संरक्षण और प्राकृतिक सौंदर्य को बढ़ावा मिला है, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था सशक्त हुई है और क्षेत्र को नई पहचान प्राप्त हुई है।

गत दिनों मां नर्मदा विचार कुंभ के अवसर पर सरदार सरोवर बांध से जुड़े विकास कार्यों को लेकर व्यापक विचार विमर्श हुआ। कार्यक्रम में जहां एक ओर बांध के कारण क्षेत्र में आए सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय बदलावों को रेखांकित किया गया, वहीं दूसरी ओर लंबे समय से चल रहे विरोध आंदोलनों की भूमिका पर भी चर्चा हुई। जो कहीं न कहीं किसी सुनियोजित योजनापूर्वक विकास के पक्ष को छिपाने के लिए प्रतीत होता है। सरदार सरोवर बांध को लेकर सामाजिक कार्यकर्ता मेधा पाटकर द्वारा 'नर्मदा बचाओ आंदोलन' के माध्यम से वर्षों से विरोध किया जाता रहा है। यह विरोध विस्थापन, पर्यावरणीय प्रभाव और पुनर्वास जैसे मुद्दों पर केंद्रित रहा है। वहीं, मां नर्मदा विचार कुंभ में यह तर्क सामने आया कि इस विरोध के समानांतर बांध से जुड़े योजनाबद्ध विकास, सिंचाई, बिजली उत्पादन और रोजगार सृजन जैसे सकारात्मक पहलुओं को पर्याप्त रूप से सामने नहीं लाया गया।

देश में राइट (दक्षिणपंथ) और लेफ्ट (वामपंथ) विचारधाराओं के बीच लंबे समय से वैचारिक मतभेद रहे हैं। बांध के संदर्भ में भी यह अंतर स्पष्ट दिखाई देता है। वामपंथी दृष्टिकोण जहां विरोध और संघर्ष को प्राथमिकता देता रहा है, वहीं संघ एवं उससे प्रेरित संगठनों ने विकास के साथ समाधान और पुनर्वास को केंद्र में रखने की बात कही है। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण मध्यप्रदेश की जीवनरेखा मानी जाने वाली मां नर्मदा पर निर्मित सरदार सरोवर बांध है। एक ओर वामपंथी विचारधारा से प्रेरित मेधा पाटकर ने नर्मदा बचाओ आंदोलन के माध्यम से इस बांध का विरोध किया, जबकि दूसरी ओर विद्यार्थी परिषद एवं संघ विचारधारा से जुड़े पर्यावरणविद् सचिन दवे ने धार जिले के धर्मपुरी क्षेत्र में आयोजित नर्मदा विचार कुंभ के माध्यम से सरदार सरोवर बांध से होने वाले विकास की वास्तविकता को जन-जन तक पहुंचाया। साथ ही उन्होंने कुक्षी क्षेत्र में पुनर्वास एवं बसाहट से जुड़े विषयों पर जन-जागरण का कार्य भी किया। मां नर्मदा विचार कुंभ के आयोजक एवं पर्यावरणविद् सचिन दवे ने धार जिले के धर्मपुरी क्षेत्र में आयोजित कार्यक्रम के माध्यम से सरदार सरोवर बांध से हुए विकास को जन-जन तक पहुंचाया। उन्होंने कुक्षी क्षेत्र में पुनर्वास एवं बसाहट को लेकर जन-जागरण करते हुए यह बताया कि बांध के कारण क्षेत्र में आधारभूत संरचना, आजीविका और जीवन स्तर में सुधार हुआ है।

सचिन दवे, जो पिछले 26 वर्षों से शिक्षा एवं पर्यावरण के क्षेत्र में सक्रिय हैं, ने नर्मदा एवं क्षिप्रा नदियों के संरक्षण को लेकर एनजीटी में याचिकाएं भी दायर की हैं। उनके प्रयासों के परिणामस्वरूप राज्य सरकार द्वारा दोनों नदियों के लिए हजारों करोड़ रुपये के विकास एवं संरक्षण कार्य प्रारंभ किए गए हैं। सरदार सरोवर बांध के निर्माण से क्षेत्र में विकास की एक नई गाथा लिखी गई है। लोगों का जीवन स्तर बेहतर हुआ है। सड़कों, आवासों, दुकानों, बस स्टैंड और नए आवासीय क्षेत्रों का निर्माण हुआ है। इसके साथ ही आर्थिक समृद्धि को भी मजबूती मिली है।

मध्यप्रदेश, गुजरात और महाराष्ट्र में लाखों किसानों को सिंचाई सुविधा मिली, जिससे कृषि उत्पादन में वृद्धि हुई। जलविद्युत परियोजना से मध्यप्रदेश को लगभग 1400 मेगावाट बिजली प्राप्त हो रही है, जिससे औद्योगिक और ग्रामीण क्षेत्रों को लाभ हुआ। मध्य प्रदेश और गुजरात कृषि क्षेत्र एवं सिंचाई क्षेत्र में सशक्त हुए हैं 2.5 हैक्टेयर सिंचाई सुविधा बड़ी है। मालवा एवं निमाड़ में 15 से 20 प्रतिशत खेती योग्य भूमि सिंचित होती थी जो वर्तमान में परियोजना के बनने के बाद 60 से 70 प्रतिशत भूमि सिंचित होती है। मालवा में 2010 में गेहूं का उत्पादन 15 से 20 क्विंटल प्रति हेक्टेयर था वर्तमान में यह 40 क्विंटल प्रति हेक्टेयर हो गया है। सड़कों, आवासों, बस स्टैंड और नए आवासीय क्षेत्रों का निर्माण हुआ, जिससे जीवन स्तर बेहतर हुआ। मां नर्मदा विचार कुंभ में प्रस्तुत विचारों ने इस बहस को नया आयाम देते हुए यह संदेश दिया कि बड़े परियोजनाओं का मूल्यांकन केवल विरोध या समर्थन के एकतरफा दृष्टिकोण से नहीं, बल्कि समाधान, पुनर्वास और समग्र विकास के संदर्भ में किया जाना चाहिए।

(लेखक नवभारत के संपादक हैं)

मालवा- निमाड़ की डायरी

मुसीबत पीछा नहीं छोड़ती पटवारी का

संजय व्यास

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी ने जब से यह पद सम्हाला है, उनका कोई कार्य निर्विघ्न नहीं होता. जब उन्होंने प्रदेश कार्यकारिणी गठित की थी, तब नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार ने उनके समर्थकों को पर्याप्त जगह न मिलने पर अपना असंतोष जाहिर किया था. इसके बाद कुछ समय पूर्व उनके

द्वारा की गई जिला संगठन की सूची कांग्रेस आलाकमान ने निरस्त कर दी थी, जो कुछ संशोधन के बाद फिर जारी हुई. अब ब्लाक अध्यक्षों की घोषणा करते ही फिर मुश्किलों ने घेर लिया है.

अंचल में रतलाम जिला अध्यक्ष हर्ष विजय गेहलोत ने सूची जारी होते ही अपने द्वारा अनुशंसित नाम उसमें न देख नाराज हो पद से इस्तीफा दे दिया. उनके साथ प्रदेश महासचिव और पूर्व जिला अध्यक्ष राजेश भरावा ने भी इस्तीफा दे दिया. हालांकि हर्ष ने इस्तीफे में अन्य कारण गिनाए, लेकिन इसे उनके समर्थकों की अवहेलना से ही जोड़ा जा रहा है.

समन्वय पर सवाल

जीतू पटवारी ने अपने दो साल का कार्यकाल पूरा होने पर पिछले दिनों ही ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्षों की घोषणा की थी. इसके ठीक अगले दिन रतलाम जिला अध्यक्ष का इस्तीफा सामने आना पटवारी का अन्य नेताओं से ठीक से समन्वय पर सवाल खड़ा कर रहा है. लंबे समय से खाली पड़े रतलाम ग्रामीण जिला अध्यक्ष पद पर हर्ष विजय गहलोत की नियुक्ति हुई थी.

हालांकि, नियुक्ति के महज चार महीने के भीतर ही उनका इस्तीफा सामने आ गया. इससे पहले 6 दिसंबर को आलीराजपुर जिला कांग्रेस अध्यक्ष मुकेश पटेल भी व्यक्तिगत कारणों का हवाला देते हुए पद छोड़ चुके हैं. उन्होंने अपने इस्तीफे में संगठन को मजबूत करने के प्रयासों का उल्लेख किया था. लगातार इस्तीफों से यह सवाल उठने लगा है कि जीतू पटवारी के कार्यकर्ताओं से समन्वय में कोई कमी तो नहीं रह जाती.

जलसंकट से लोग आक्रोशित, भड़के महापौर

जनप्रतिनिधि अधिकारियों की लापरवाही के कारण जनता के निशाने पर आ गए. समस्या से पीड़ित आक्रोशित लोगों की खरी-खरी सुन आखिर उन्होंने अधिकारियों की खिंचाई कर दी. मामला रतलाम नगर निगम से संबंधित है. शहर की करीब आधी आबादी हफ्ते भर से उपर जलसंकट से जूझ रही थी, नगर निगम में शिकायतों का अंबार लग गया. कोई समाधान न किए जाने से जनता बिफर गई. उसने महापौर प्रहलाद पटेल को घेरा और उनके उपर खरी खोटी सुनाकर भड़ास निकाली. अपमानित महापौर पटेल ने तत्काल अधिकारियों को खड़ा किया व निगम अमले की लापरवाह कार्यप्रणाली को लेकर भडक़ गए. महापौर प्रहलाद पटेल ने नगर निगम के जलप्रदाय विभाग के कार्यो की समीक्षा कर कार्य समय पर पूर्ण करने तथा ठोस कार्य योजना के साथ करने के निर्देश दिये. जलप्रदाय विभाग को निर्देशित किया कि नगर के नागरिकों को समय पर पेयजल उपलब्ध हो इस हेतु किसी भी कार्य को करने से पूर्व ठोस कार्ययोजना तैयार की जाये ताकि नागरिकों को किसी प्रकार की असुविधा न हो. साथ ही यह भी निर्देश दिये कि नवीन पेयजल पाईप लाईन बिछाये जाने के कार्य के दौरान इस बात का विशेष ध्यान रखा जाये कि रोड़ क्षतिग्रस्त ना हो जहां तक हो सके रोड़ के साईड में पेयजल पाईप लाईन बिछाई जाये. अब देखते हैं कि अधिकारी महापौर के निर्देश को कितनी गंभीरता से लेते हैं.

आरएसएस और बीजेपी का चश्मा!

आरएसएस के सरसंघचालक मोहन भागवत ने देशवासियों को सतर्क किया है कि संघ को बीजेपी के चश्मे से न देखें. यह संदेश उन लोगों के लिए है, जो दोनों को एक ही समझते हैं. वजह साफ है क्योंकि संघ का स्वयंसेवक सिर्फ बीजेपी में ही जाता है. उसे कभी कांग्रेस, सपा, कम्युनिस्ट या आम आदमी पार्टी की तरफ जाते नहीं देखा गया.

दरअसल संघ खुद को सामाजिक-सांस्कृतिक संगठन बताता आया है, लेकिन उसके स्वयंसेवकों को छूट है कि वह अपनी अभिरुचि के अनुसार चाहे जिस क्षेत्र में जाएं. इसलिए राजनीति में रुचि रखने वाले सीधे बीजेपी में चले जाते हैं. बीजेपी के नेता चाहे प्रधानमंत्री मोदी हों या गडकरी अथवा देवेंद्र फडणवीस सभी संघ के स्वयंसेवक हैं. संघ की सीढ़ी से चढ़कर ही वह अपनी मंजिल पर पहुंचे हैं. संघ ऐसा विश्वविद्यालय है, जो संस्कार व राष्ट्रभक्ति की सीख देता है. बाद में राजनीतिक पार्टी के रूप में बीजेपी कैसी चुनाव चाल या दावपेंच अपनाती है, उसकी जिम्मेदारी संघ नहीं लेता और लेना भी नहीं चाहिए. बीजेपी अपने प्रवाह में कितने ही ऐसे नेताओं को शामिल कर लेती हैं, जिनका संघ से कोई लेना-देना नहीं रहा. पूर्व कांग्रेसी नेताओं पर जब जांच एजेंसियों का शिकंजा कसता है, तो वह बीजेपी की वॉशिंग मशीन में धुलकर बेदाग हो जाते हैं. बीजेपी ऑपरेशन लोटस चलाकर अन्य पार्टियों को तोड़ती है और अपना गठबंधन मजबूत बनाती है, तो इसमें संघ को कोई आपत्ति नहीं होती. पार्टी का काम ही अपनी ताकत बढ़ाना और किसी न किसी तरह से सत्ता हासिल करना रहता है. इसलिए संघ की ओर से बीजेपी की तत्वनिष्ठा की कोई गारंटी नहीं ली जाती. संघ बैकग्राउंड में रहने वाला अभिभावक है, जिसने पहले जनसंघ बनाया था. बाद में बीजेपी बना ली. उसका परिवार बहुत बड़ा है, जिसमें अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद, विश्व हिंदू परिषद, बजरंग दल, दुर्गावाहिनी, शिक्षा भारती, उद्योग भारती, भारतीय किसान संघ, भारतीय मजदूर संघ, वनवासी कल्याण आश्रम जैसे कितने ही संगठन हैं. संघ जड़ है तो बीजेपी वृक्ष. संघ सूत्रधार है और बाकी उसके मंचों के कलाकार इसलिए संघ को उसके मूल रूप से देखें. बीजेपी के चश्मे से उसका विराट स्वरूप नहीं दिखाई दे सकता.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

पुराने कॉमिक्स की आई याद अब कॉमेडी शो है आबाद

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज जब मोबाइल फोन का एडिक्शन नहीं था, तब बच्चे कॉमिक्स पढ़ा करते थे. हमें फैंटम, जादूगर मैन्ड्रेक, चाचा चौधरी, कमांडो ध्रुव जैसे कॉमिक्स तथा चंपक, पराग, लोटपोट, चंदामामा जैसी मैगजीन या पत्रिकाओं की याद आती है.'

हमने कहा, 'आप बच्चे नहीं हैं इसलिए उन पुरानी बातों को भूल जाइए. आज छोटे बच्चे को भी दिल बहलाने के लिए मोबाइल दे दिया जाता है. कॉमिक्स पढ़ने की किसी को फुर्सत नहीं है. लोगों ने चिट्ठी-पत्री लिखना कब का छोड़ दिया है. एसएमएस और चैटिंग करते रहते हैं.' ॅ पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, हम उस फैंटम की बात कह रहे हैं जिसकी कहानी नवभारत में 'मृत्युंजय' नामक कॉमिक स्ट्रिप में छपा करती थी. फैंटम की पत्नी का नाम डायना था. वह अफ्रीका के घने जंगल की खोपड़ी गुफा या स्कलकेव में रहता था, जहां उसके 21 पीढ़ी के पूर्वजों की कब्र और उनके कारनामों का इतिहास मौजूद था. उसके बारे में कहा जाता था कि वह कभी मरता नहीं. उसका रहस्य सिर्फ मोजबाबा

और गुरान नाम का अनुचर जानता था. जब फैंटम शहर जाता था तो ओवरकोट और काला चश्मा पहनता था. वहां उसका नाम वाकर रहा करता था. उसकी पत्नी डायना न्यूयॉर्क के अस्पताल में नर्स का काम करती थी. डायना के चाचा डेव न्यूयॉर्क के पुलिस कमिश्नर थे. फैंटम उनके घर खिड़की से घुसकर जाता था.'

हमने कहा, 'आप यह तो बताना भूल ही गए कि फैंटम इतना ताकतवर था कि एक मुक्के से किसी तगड़े बदमाश को बेहोश कर देता था. वह जंगल पेट्रोल या गश्ती क्षेत्र का अज्ञात कमांडर था. वह एक सूखे कुएं में उतरकर वहां की सुरंग से अपने कमरे में जाता था और वहां कर्नल वीक्स या कर्नल वोरबू के लिए संदेश छोड़ आता था. वहां लाइट जलते ही पता चलता था कि कमांडर का आदेश आया है. गश्ती क्षेत्र के किसी भी सैनिक ने अपने कमांडर को नहीं देखा. फैंटम को चलता-फिरता भूत या घोस्ट हू वाक्स भी कहा जाता था. वर्तमान फैंटम के जुड़वा बच्चे किट और हेलोइस बताए गए हैं.' पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, जादूगर मैन्ड्रेक का निवास पहाड़ की चोटी पर था जिसे जनाडू कहा जाता था. उसकी पत्नी का नाम नारडा और ताकतवर सहायक का नाम लोथर था. उसके रसोइए का नाम होजो था. मैन्ड्रेक जादू के इशारे या सम्मोहन से बदमाशों को परास्त कर देता था. मारपीट का काम लोथर करता था. अंतरिक्ष के ग्रहों का स्वामी मैगनन मैन्ड्रेक मित्र था.'

हमने कहा, 'चाचा चौधरी के नौकर का नाम साबू था जो मंगल ग्रह से आया था. वह कॉमिक्स भी बड़ा मजेदार था. अब यह बातें पुरानी हो गईं. आप कॉमिक्स की बजाय टीवी पर आने वाले कॉमेडी शो देखिए. खुद बैठे रहिए और स्टैंड अप कॉमेडियन की बक-बक सुनिए.'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12119 - डॉ. सागर खादीवाला

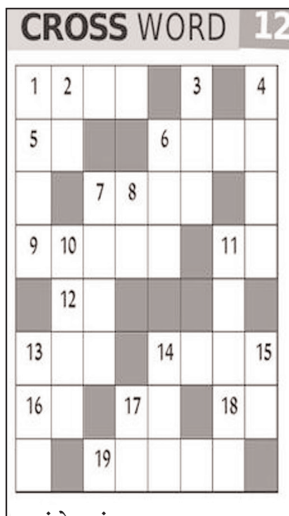

ऊपर से नीचे

1. किसी कार्य के निमित्त की जाने वाली प्रार्थना, निवेदन 2. शरीर की नस या नाड़ी (उर्दू) 3. सबब, वजह 4. छल, कपट या अनाचार करने वाला, अधर्मी, अविश्वसनीय (उर्दू) 6. कीर्ति गायक, भाट, राजस्थान की एक जाति 7. अध्याय, प्रसंग 8. तत्व, सत्त, तात्पर्य 10. जिसने सांसारिक सुखों या वस्तुओं के प्रति अनुराग या आसक्ति छोड़ दी हो, बुद्ध का एक नाम 11. वह विज्ञान जिसमें भाषा की उत्पत्ति-विकास और रूप परिवर्तन आदि का विवेचन होता है 13. पूजा जाना, सम्मानित होना 14. पृथक, जुदा 15. शालि जिसमें से चावल निकलता है 17. किसी वस्तु पर अपना हक जतलाना, स्वत्व, मुकदमा (उर्दू)

बाएं से दाएं

1.रिजर्व कराना, रिजर्वेशन (सं.) 5. प्रवाह, बहाव, रफ्तार 6. खाट 7. रेडियो या दूरदर्शन से कार्यक्रम का प्रस्तुतिकरण, फैलाना 9. फिर से नया कर देना, जिसकी अवधि समाप्त हो चुकी हो उसे फिर से आगे के लिए वैध या नियमित करना 11. आभास, ज्ञान, प्रकाश 12. गीला, शीतल (उर्दू) 13. हिंदुओं के अठारह धार्मिक आख्यान जिनकी रचना वेदव्यास ने की थी, पुरातन 14. दिक्कत, कठिनाई 16. संसार 17. दली हुई अरहर-मूंग आदि 18. बोध, जानना 19. आवाजाई, आमदरफ्त

Solution 12118

अ	वै	त	नि	क		छा	जा
क	ण		ज	म	घ	ट	
ब		म			ना	प	ना
र	ज	त	पा	त्र		टा	ई
	क	ल	म		बी	ना	
में		बी	र	ब	ल		प
ढ	ब			स	चा	व	ट
क	री	ब		ना	ल		ल

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में शिक्षा प्रतियोगिता में सफलता मिलेगी. यात्रामें बैचारिक वाद विवाद होगा. धार्मिक कार्यों में रूचि रहेगी. वर्ष के मध्य में मित्रों तथा भाईयों का सहयोग, अचल संपत्ति के कार्यों में सफलता मिलेगी. दाम्पत्य जीवन में मधुरता रहेगी. कार्यक्षेत्र में व1द्धि होगी. कर्मचारियों का सहयोग बना रहेगा. वर्ष के अन्त में पारिवारिक समस्याओं में व्यस्तता रहेगी.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को भाईयों और मित्रों का कार्यों में सहयोग बना रहेगा. अचल संपत्ति से लाभ होगा. दाम्पत्य जीवन में मधुरता आयेगी. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को यात्रा में सावधानी रखकर कार्य करना हितकर रहेगां. कर्क राशि के व्यक्तियों को शारीरिक कष्ट रह सकता है. सिंह राशि के व्यक्तियों को सफलता मिलेगी. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को अच्छा स्थान, पद प्राप्त होगा. मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को कार्यक्षेत्र में परिश्रम बढेगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक सुन्दर, स्वस्थ्य, भाग्यवान, और हंसमुख होगा, इसकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी, जन्म स्थान के पास ही अपना भाग्योदय करेगा, माता पिता को जीवन में सुखी रखेगा.

मेष- जीवनसाथी की भावनाओं का ध्यान रखें, अपनों की मदद करके प्रसन्नता होगी, हर्षदायक वातावरण रहेगा, गुमी वस्तु मिलने से संतोष रहेगा.

वृषभ- खानपान में सावधानी रखें, रोजगार के नये अवसर मिलेंगे, दिनचर्या नियमित रहेगी, सोचे विचारे कामपूरे होंगे, संयम से कार्य करें.

मिथुन- जिसे आप चाहते हैं, उससे मन की बात कह दें, इससे रिश्ते मजबूत होंगे, सुख सुविधा पर खर्च होगा, व्यापार में सफलता मिलेगी, निजी कार्यों में मन लगेगा.

कर्क- चुप रहने से लोग गलत समझ सकते हैं, उनझनें दूर होंगी, कोर्ट कचहरी के कार्यों में सफलता प्राप्त होगी, गुप्त शत्रुओं का शमन होगा.

सिंह- कानूनी मामले में पक्ष मजबूत होगा, अधूरे काम पूरे होंगे, कोर्ट कचहरी के कार्यों में सफलता प्राप्त होगी, गुप्त शत्रुओं का शमन होगा.

कन्या- भावुकता में लिये फैसले बदलना पडेंगे, राजकीय मामले पक्ष में सुलझेंगे, पारिवारिक जीवन में सुख शांति रहेगी, व्यापार व्यवसाय में सफ्लता मिलेगी.

तुला- नई जिम्मेदारी आने से व्यस्तता बढेगी, सामाजिक कामकाज में खर्च होगा, शिक्षा संतान के कार्यों में सफ्लता मिलेगी, आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी.

वृश्चिक- कामकाज में देरी से तनाव बढ़ेगा, बुजुर्गों के स्वास्थ्य की चिन्ता होगी, भूमि भवन मकान आदि से संबंधित विवादों का समाधान होगा, अतिथि आगमन होगा.

धनु- दौड़धूप से कामकाज पूरा होगा,सामाजिक क्षेत्र में व्यस्तता बढेगी, सुख साधनों में वृद्धि होगी, आजीविका के प्रयासों में सफ्लता के योग है.

मकर- रूकी हुई योजनाओं में गति आयेगी, शिक्षा के प्रयासों को लेकर यात्रा होगी, मित्रों के सहयोग से कार्य प्रारंभ होंगे, थकान भी महसूस होगी.

कुम्भ- विरोधी परेशान करेंगे, अधिकारी से संपर्क का लाभ मिलेगा, धार्मिक कार्य बनेगा, संतान संबंधी समाचार मिलेगा, नए कार्यों में हर्ष रहेगा.

मीन- कार्य बनाने किसी की सिफारिश करना पडेगी, मेहनत का लाभ होगा, शारीरिक शिथिलता रहेगी, मित्र वर्ग आपकी भरपूर मदद करेंगे.

उदयकालीन ग्रह चाल

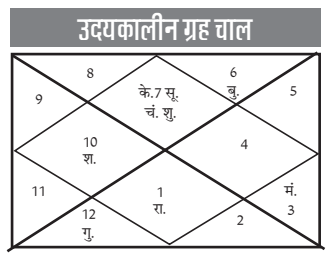

पंचांग

रा.मि. 02 संवत् 2082 पौष शुक्ल तृतीया भौमवासरे दिन 10/34, श्रवण नक्षत्रे रातअंत 5/41, व्याघात योगे शाम 4/5, गर करणे सू.उ. 6/47, सू.अ. 5/13, चन्द्रचार मकर, पर्व-वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, शु.रा. 10,12,1,4,5,8 अ.रा. 11,2,3,6,7,9 शुभांक- 3,5,9.

व्यापार भविष्य

पौष शुक्ल तृतीया को श्रवण नक्षत्र के प्रभाव से गुड़ खांड, सरसों, के भाव में मंदी होगी, जीरा, धनियां, लौंग, कालीमिर्च, मैथी में मंदी होगी, सोना, चांदी, में स्थिरता रहेगी, लाल वस्तुओं में घटाबढी, होगी. भाग्यांक 2614 है.

SUDOKU 7251

			4				3	
		6		2		4		
		8			5			
	3						7	
7				4				9
	9						5	
			2			1		
		1		7		6		
	5				3			

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7250

7	8	5	4	2	9	6	3	1
3	6	4	1	5	7	8	9	2
9	2	1	6	3	8	7	4	5
6	5	3	2	8	4	9	1	7
1	7	2	3	9	6	4	5	8
4	9	8	7	1	5	2	6	3
2	4	7	5	6	1	3	8	9
5	3	9	8	4	2	1	7	6
8	1	6	9	7	3	5	2	4